लव F14

संपादनः
डॉ. मुक्ता खन्ना

प्रकाशक

NotNul
(A product of Greenfield IT Solutions)

16/1454, इंदिरा नगर, लखनऊ - 226016
मोबाइल: 8935021999

ईमेल: Neelabh.Srivastav@gfitsolutions.com
info@gfitsolutions.com

© NotNul

संपादन: डॉ. मुक्ता खन्ना

संसकरण: 2015

(**लव F14**: Love Story Collection)

इस किताब के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। किसी भी रूप में इसका प्रतिलिपीकरण व वितरण प्रतिबंधित है।

भूमिका

प्रेम, इश्क, मोहब्बत, प्यार या लव चाहे इस मनोभावना को कोई भी नाम दें इतना तो तय है कि ये भाव मानव-मन को रस सिक्त कर देता है। हिन्दी साहित्याकाश में टिमटिमाते ऐसे अनेक सितारे हैं जिन्होंने प्रेम के हर रंग को कहानी में दर्शाया है उनमें से किन्हीं चौदह सितारों को रेखांकित करना कठिन से भी कठिनतम हैं क्योंकि हर सितारे का अपना महत्व है।ऐसे में कालखण्ड, कहानी के विभिन्न आन्दोलनों तथा विविध प्रेम रीतियों को ध्यान में रखकर कहानियाँ संयोजित की गई। ये चौदह प्रेम कहानियाँ हर दौर में बदलती प्रेम की भावना पर प्रकाश डालती हैं , कुछ कहानियाँ दुखान्त है , कुछ सुखान्त तो कुछ हसीन मोड़ देने को बावस्ता। इस पुस्तक में चंद्रधर शर्मा गुलेरी, मुंशी प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, उपेन्द्र नाथ 'अश्क', राजेन्द्र यादव, निर्मल वर्मा, मन्नू भण्डारी, ममता कालिया, चित्रा मुद्गल, मधु कांकरिया, सुषमा मुनीन्द्र, रजनी गुप्त, कविता तथा आकांक्षा पारे की प्रेम कहानियाँ संकलित हैं।

हमने चौदह कहानियों को तीन खंडों में बाँटा है `आदर्श',`अंतर्द्वंद्व' और `अस्तित्व'। `आदर्श' के अंतर्गत प्रेम और कर्तव्यनिष्ठा में कर्तव्य की स्वीकृति युक्त कहानियाँ प्रस्तुत है `अंतर्द्वंद्व' में प्रेम एवं समाज तथा कर्तव्य और कुंठा उहापोह से ग्रस्त कहानियाँ वर्णित है तथा `अस्तित्व' में व्यक्तिगत मनोभावों युक्त कहानियों को सहेजा है।

हम ये दावा नहीं करते कि हमारे द्वारा संकलित कहानियाँ सबसे बेहतरीन हैं,हाँ इतना जरूर कह सकते हैं कि उक्त चौदह कहानियाँ पाठकों को प्रेम के अन्यान्य रूपों से रूबरू जरूर करायेंगी। फिलहाल हिन्दी साहित्य सागर से लाये ये चौदह मोती सुधि पाठकगणों को अर्पित हैं।

-

-- डा.मुक्ता खन्ना

पुस्तक- खण्ड

आदर्श

उसने कहा था'

प्रेम की होली

पुरस्कार

अंतर्द्वंद्व

छोटे छोटे ताजमहल

दहलीज

यही सच है

लगभग प्रेमिका

केंचुल

अन्वेषण

अस्तित्व

ऑन लाइन रोमांस

क्यों होता है ऐसा बार बार

मेरी नाप के कपड़े

पलाश के फूल

आदर्श

प्यार का एक रूप आदर्श है जिसमें त्याग, विश्वास, कर्तव्य और समर्पण आदि भावों का समावेश होता है आरंभिक दौर की कहानियों में हमें प्रेम की यही सुगंध मिलती है।इसके अंतर्गत `उसने कहा था ', `प्रेम की होली' ,`पुरस्कार' और `पहेली' कहानियाँ आती हैं।

लहना सिंह का सूबेदारनी के पति और पुत्र की रक्षा का प्रसंग(`उसने कहा था'); विधवा गंगी का गरीबसिंह के प्रति मूक प्रेम और परवशता(`प्रेम की होली');मधूलिका के देशप्रेम का व्यक्तिगत प्रेम पर हावी होना(`पुरस्कार') तथा रामदयाल द्वारा अपने प्रेम को परखे जाने के ढंग से क्षुब्ध उर्मिला की मनःस्थिति प्रेम के आदर्श रूप हैं।

उसने कहा था

--चंद्रधर शर्मा गुलेरी

`तेरी कुढ़माई हो गई'`धत्' सन् 1915 में प्रकाशित इस कहानी ने लहना सिंह और सूबेदारनी को ही चर्चित नहीं किया अपितु अपने संवादों से भी आमजीवन पर छाप छोड़ी है।

'उसने कहा था' आज की पीढ़ी के लिए एक सीख है।आज जब प्यार को पाने में नाकामी मिलती है तो अपने अहं पर चोट मानकर युवा वर्ग भटक जाता है कभी खुद को तो कभी अपने प्यार को तकलीफ देता है ऐसे में ये कहानी बताती है कि सच्चा प्यार क्या होता है ? वह आत्मिक है। हम जिसे प्यार करते हैं उसे मार नहीं डालते बल्कि उसके लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी के लिए तैयार रहते हैं।

आज के युवा वर्ग को 'उसने कहा था' जरूर पढ़नी चाहिए।

आदर्श

बड़े-बड़े शहरों के इक्के गाड़ीवालों की ज़बान के कोड़ों से जिनकी पीठ छिल गयी है और कान पक गये हैं, उनसे हमारी प्रार्थना है कि अमृतसर के बम्बू कार्टवालों की बोली का मरहम लगावें। अब बड़े-बड़े शहरों की चौड़ी सडकों पर घोड़े की पीठ को चाबुक से धुनते हुए इक्केवाले कभी घोड़े की नानी से अपना निकट सम्बन्ध स्थिर करते हैं, कभी राह चलते पैदलों की आँखों के न होने पर तरस खाते हैं, कभी उनके पैरों की अँगुलियों के पोरों को चीथकर अपने ही को सताया हुआ बताते हैं और संसार-भर की ग्लानि, निराशा और क्षोभ के अवतार बने नाक की सीध चले जाते हैं, तब अमृतसर में उनकी बिरादरीवाले तंग चक्करदार गलियों में, हरएक लड्ढीवाले (गाड़ीवाले) के लिए ठहरकर, सब्र का समुद्र उमड़ाकर -- 'बचो खालसाजी', 'हटो भाईजी', 'ठहरना भाई', 'आने दो लालाजी', 'हटो बाछा' करते हुए सफ़ेद फेटों, खच्चरों और बतकों, गन्ने और खोमचे और भारेवालों के जंगल में से राह खेते हैं। क्या मजाल है कि जी और साहब बिना सुने किसी को हटना पड़े। यह बात नहीं कि उनकी जीभ चलती ही नहीं; चलती है, पर मीठी छुरी की तरह महीन मार करती है। यदि कोई बुढ़िया बार-बार चितौनी देने पर भी लीक से नहीं हटती, तो उनकी वचनावली के ये नमूने हैं - 'हट जा, जीणे जोगिए; हट जा, करमा वालिए ; जा, हट जा, पुत्ताँ प्यारिए; बच जा, लम्बी बालिए !' समष्टि में इसका अर्थ है कि तू जीने योग्य है, तू भाग्योंवाली है, पुत्रों की प्यारी है, लम्बी उमर तेरे सामने है, तू क्यों मेरे पहियों के नीचे आना चाहती है? - बच जा।

ऐसे बम्बू-कार्टवालों के बीच में होकर एक लड़का और लड़की चौक की एक दुकान पर आ मिले। उसके बालों और इसके ढीले सुथने से जान पड़ता था कि दोनों सिख हैं। वह अपने मामा के केश धोने के लिए दही लेने आया था और यह रसोई के लिए बड़ियाँ। दुकानदार एक परदेशी से गुथ रहा था, जो सेर - भर गीले पापड़ों की गड्डी को गिने बिना हटता न था।

"तेरे घर कहाँ है!"

"मगरे में -- और तेरे!"

"माझे में; यहाँ कहाँ रहती है?"

"अतरसिंह की बैठक में, वे मेरे मामा होते हैं।"

"मैं भी मामा के यहाँ आया हूँ, उनका घर गुरुबज़ार में है।"

इतने में दूकानदार निबटा और इनका सौदा देने लगा। सौदा लेकर दोनों साथ-साथ चले। कुछ दूर जाकर लड़के ने मुस्कुराकर पूछा --

"तेरी कुड़माई (सगाई) हो गयी?" इस पर लड़की कुछ आँखें चढ़ाकर 'धत' कहकर दौड़ गयी और लड़का मुँह देखता रह गया।

दूसरे-तीसरे दिन सब्ज़ीवाले के यहाँ या दूधवाले के यहाँ अकस्मात् दोनों मिल जाते। महीना -- भर यही हाल रहा। दो-तीन बार लड़के ने फिर पूछा, 'तेरी कुड़माई हो गयी?' और उत्तर में वही 'धत' मिला। एक दिन जब फिर लड़के ने वैसे ही हँसी में चिढ़ाने के लिए पूछा तब लड़की, लड़के की सम्भावना के विरुद्ध बोली "हाँ हो गयी। "

"कब।"

"कल--देखते नहीं यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू! (ओढ़ती)" लड़की भाग गयी। लड़के ने घर की राह ली। रास्ते में एक लडके को मोरी में ढकेल दिया, एक छाबड़ीवाले (खोमचे वाले) की दिन-भर की कमाई खोयी, एक कुत्ते पर पत्थर मारा और एक गोभीवाले के ठेले में दूध उड़ेल दिया। सामने नहाकर आती हुई किसी वैष्णवी से टकराकर अन्धे की उपाधि पायी। तब कहीं घर पहुँचा।

"राम-राम, यह भी कोई लड़ाई है! दिन-रात खन्दकों में बैठे हड्डियाँ अकड़ गयीं। लुधियाने से दस गुना जाड़ा, और मेंह और बरफ ऊपर से। पिंडलियों तक कीच में धँसे हुए हैं। गनीम (दुकान) कहीं दिखता ही नहीं -- घंटे - दो- घंटे में कान के परदे फाड़नेवाले धमाके के साथ सारी खन्दक हिल जाती है और सौ-सौ गज धरती उछल पड़ती है! इस गैबी गोले से बचे तो कोई लड़े। नगरकोट का जलजला (भूकम्प), सुना था, यहाँ दिन में पचीस जलजले होते हैं। जो कहीं खन्दक से बहार साफ़ा या कुहनी निकल गयी तो चटाक से गोली लगती है। न मालूम बेईमान मिट्टी में लेटे हुए हैं या घास की पत्तियों में छिपे रहते हैं।"